ए.एफ. नजर की ग़ज़लों में गांव–गलियारे व लोक जीवन का चित्रण : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ.रामावतार मेघवाल

सहायक आचार्य हिन्दी विभाग

राजकीय कला महाविद्यालय कोटा

सारांश

ग़ज़ल मन के भावों को शेरों के माध्यम से अभिव्यक्त करने की कला का नाम है, गजल. गागर में सागर भरने के अपने सामर्थ के कारण ही वर्तमान दौर में बहुतायात से लिखी जा रही है, पहल के शायर ए.एफ. नजर सही मायनों में नये दौर के शायर हैं, वे ऐसे मसाइल को गजल को मौजू बनाते हैं जो इस दौर ने हमें दिए हैं. मुहब्बत करने की उम्र में दुनिया जहान के बारे में इतनी शिद्दत एवं संजीदगी से सोचने वाले श्नजरश निसंदेह ऐसे कलमकार हैं जो अपने आस–पास के वातावरण से शेर उठाकर अपनी गजलों को मुकम्मल करते हैं.

ए.एफ नजर हिन्दी के ऐसे नवोदित गजलकार है जो गजल लेखन में पूर्ण सक्षम तथा सिद्धहस्त है। इनकी जगलों में कथ्य की दृष्टि से जहाँ काफी विविधता है वही शिल्प की दृष्टि से देखें तो भी इनकी गजलें सुदृढ़ नजर आती है। उनकी गजलें में ग्रामीण परिवेश के साथ साथ ग्रामीण संस्कृति प्रकृति के भी दर्शन होते है। नजर साहब की सायरी में वृद्ध विमर्श की एक खास झलक दिखाई देती है कई जगह प्रतीकों के माध्यम से तो कई बार सीधे ही मा और बुजुर्गों के हवाले से बड़े खुबसूरत शेर कहे है।

कुंजी शब्द :– गजल, परिवेश, ग्रामीण जीवन, प्रकृति, मूल्य, समकालीन, आधुनिकता।

भूमिका :

ए.एफ नजर हिन्दी गजल के बेहद संजीदा जमीन से जुड़ी गजलें कहने में सिद्धहस्त गजलकार है। उनकी गजलों में जहाँ जमाने भर की चिंता है वही जीवन जीने का हौंसला भी छुपा है, जो न केवल प्रेरणा देता है वरन् जीने का मार्ग भी प्रशस्त करता ळें 'अपने ही दिल में कहीं सच्ची खुशी को ढूँढना, दोस्तो बाजार में मत जिन्दगी को ढूंढना' ।।[1]

जैसे सच्चे शेर कहने वाले नजर की गजलों का एक खास मिजाज है जो उन्हे दूसरे गजल कारों से अलग मुकाम देता है यह हैउनकी गजलों में गहराई तक उतरा हुआ अपनापन, जो पर परिवार आस पडौस परिवेश पर्यावरण, समाज राष्ट्र के प्रति दिखलाई देता है। नजर साहब के इस गजल संग्रह से गुजरते हुए अनायास ही उनसे जुठाव महसूस होने लगता है और पे जुडाव उस हर शब्द को होगा जो अपनी घर – परिवार, गाँव जंगल और जमीन से जुडा हुआ है। इस संग्रह की पहली गजल से ही उनका चिंतन स्पष्ट होने लगता है. जिसमें लगातार विकसित होते जा रहे महानगरों ने किस प्रकार हमारे गाँवों को लील लिया है–

छत से छत की मीठी बातें और अपनापन छीन लिया

फ्लैटों की चाहत ने हम से चौड़ा आँगन छीन लिया।[2]

इक्कीसवी सदी के कथा साहित्य में जहाँ एक और गाँव हाशिए पर जाते जा रहे हैं वहीं यह गजल का जादू है जो आज भी गाँव कस्बे की न केवल फिक्र करता है बल्कि इससे बढ़कर उसे अभिव्यक्त करता है। उन्हें आज भी यही लगता है कि गाँव में आपसी भाईचारा और प्रेम मौजूद है। इसीलिए वे कहते हैं–

दिलों में चाह होती है कभी खंजर नहीं होते
हमारे गाँव में ये बदनुमा मंजर नहीं होते ।[3]

इस उत्तर आधुनिक सभ्यता और बाजारवाद के दौर में एक अजीब सा डर हमारे दिलो दिमाग में समाया जाता है। पुराने मूल्यों का विघटन होता जा रहा है और नये मूल्यों का सृजन हो रहा है। इन नव सृजित मूल्यों के साथ साथ सास्कृ तिक प्रदूषण भी हमारे घर परिवार में शामिल होता जा रहा है। नजर साहब इसे अपनी खुशकिस्मती मानते हैं अभी तक नयी सभ्यता का असर हमारी ग्रामीण संस्कृति पर इतना अधिक नहीं हुआ ये लिखते है–

नई तहजीब दुनिया की मेरे घर तक नहीं पहुँची

खुदा का शुक्र बेददी मेरे दर तक नहीं पहुँची ।[4]

नजर की गजलों की सबसे बड़ी सार्थकता यह है कि ये इस भ्रम को तोड़ती है कि समकालीन जीवन सिर्फ शहरों महानगरों तक सीमित है। दिल में अगर उमंगें हों और आदमी की संवेदनाएँ अगर जीवित है तो उसे हर जगह जीवन दिखाई देता है और इस जीवन का मंत्र भी वे बड़ी आसानी से दे जाते हैं।

जीवन की मुश्किल राहों पर हँसते गाते चलना सीख

अंधियारों को रोशन कर ले दीपक जैसे जलना सीख।[5]

नजर साहब की गजलों में शहरों और महानगरों से दूर ग्रामीण परिवेश का ऐसा वितान रचती है जिसमें अभी भी खुशियों जिन्दा है हँसी जिन्दा है इसमें भी बढ़कर संस्कृति जिन्दा है उनका स्पष्ट मानना हैकि ये गाँव और कस्बे ही हैं जो हमारी भारतीयता को आज भी जीवित रखे हुए है।

रंग बिरंगी रोशनियों के जंगल में खो जाओगे

शहर की जानिबदेखोगे तो दीवाने हो जाओगे।

और

हमारे गाँव में अब भी सुहानी है फजा यारो

सुना है शहरों में तेजाब की बरसात होती है।[6]

गाँव की मिट्टी से उनका जुठाय एकदम स्वाभाविक है भले ही रोजगारी उन्हें गाँव से दूर भले ही ले जाये आई हो वरन गाँव से बिछडने के दर्द को वो आज भी बड़ी शिद्धत से महसूस करते है और इसीलिए कहते कि–

पुरानी शाख से इक सब्ज पत्ता छूट कर रोया

मैं अपने गाँव से निकला तो बरगर फूट कर रोया।[7]

अगर विमर्शों के दृष्टिकोण से इस संग्रह की गजलों की समीक्षा करे तो वर्तमान प्रचलित सभी विमर्श कमोबेश इस संग्रह में दिखलायी देखे हैं स्त्री विमर्श दलित विमर्श बाजार के साथ साथ वृद्ध विमर्श भी उनके यहाँ दिखलायी पडता है स्त्री विमर्श के लगभग सभी रूप इनकी गजलों में समाहित है चाहे बेटी को बचने की चिंता हो या कामकाजी स्त्रियों का दर्द या फिर गृहणी के प्रति संजीता नजरिया है संवेदनाओं से लवरेज भावनाओं से पुष्ट एक ऐसा ही संजीदा संग्रह है–

मेरे आने की तारीखें बराबर देखती होगी

वो हर शब सोने से पहले, कलेण्डर देखती होगी

सवेरे रोज अपने वक्त पर स्कूल जाती है

अगर खुद को हमेशा घर अन्दर भूल जाती है

मेरे कपडे किताब कॉपिया वस्ता मेरा खाना

इन्हीं कामों में अम्मा खुलको अवसर भूल जाती है।[8]

संग्रह की गजलें जनवादी चेतना से भी ओत प्रोत है दलित हो चाहे आम आदमी की चिंता आप चाहे तो इसे विमर्श का नाम दे सकते है लेकिन इन सबके बीच इंसानियत को बचाने की चिंता नजर साहब करते है आजादी के इतने सालों बाद भी अगर देश में गरीबी है तो वे लिखते है कि

सहर होने का दावा झूठ है सरकार से कह दो

अभी तक रोशनी मजदूर के घर तक नहीं पहुंची।[9]

आज भी गरीबी को मिटाने की योजना पाँच सितारा होटलो में बैठकर बनाई जाती है गरीबो के वास्तविक हालातों से रुबरु होकर कोई दिखता नहीं है। आज आधी से ज्यादा सदी बीत गयी आजाद हुए लेकिन सरकार के दावे झूठे दिखलाड देते है–

कहाँ तक सब रक्खे के वसो लाचार की आँखें

ये किन मुद्दों में उलझी हैं मेरी सरकार की आखे।[10]

इक्कीसवीं सदी भूमण्डली करण और बाजार बाद की है आज सार विश्व अमेरीकी पूँजीवाद से पीडित है मुक्त व्यापार के दौर में आज बहुराष्ट्रीय कम्पनियां हमारे घरेलू बाजारों को प्रभावित कर रही है। एक डर आदमी के भीतर समायाजाता है। आज बाजार की पहुंच सीधे हमारे घर तक हो गई है इस लिए वे लिखते हैं कि –

डर के में बाजार से जब यार घर में आ गया

मेरे पीछे–पीछे सब वाजार घर में आ गया।[11]

जैसे– जैसे जीवन में तकनीकी विकास का प्रवेश बढ़ता जा रहा है आम आदमी का जीना मुश्किल होता जा रहा है। वैश्वीकरण के कारण लगातार महा नगरों की संख्या बढ़ती जा रही है तो जीवन में भी दहशत बड़ती जा रही है।

तरक्की ने अजब हालात पैदा कर दिये या रब

नगर बढ़ता है जैसे–जैसे दहशत बड़ती जाती है।[12]

नजर साहब की शायरी में वृद्ध विमर्श की एक खास झलक दिखाई देती है कई जगह प्रतीकों के माध्यम से तो कई बार सीधे ही मा और बुजुर्गों के हवाले से बड़े खुबसूरत शेर कहे है मसलन –

बुजुर्गों का अदव रखती है गाँवों में नजर अब भी

बड़ों के सामने झुक जाते है छोटों के सर अब भी

मों के हवाले से भी कई उमदा शेर नजर ने इस संग्रह की गजलों में कहे है

ऐ गुरवत छोड दे दामन मुझे अब लौट जाने दे

मेरी माँ डूबते सूरज का मन्जर देखती होगी

मेरी हर जीत के पीछे यही एक बात होती है

दुआ मों की भी मेरी कोशिशों के साथ होती है।[13]

गरीबी और बचपन दोनों ही जब आ गये जिद पर मनाकर मुझ को माँ रोई में उससे रूठ कर रोया दुनिया जहान की तमाम फिक्र के बीच भी नजर साहब की गजलों में वह आशिकाना अंदाज भी है जिसकी वजह से गजल को गजल कहा जाता है। जैसा की प्रचलित और स्थापित मान्यता है कि गजल शब्द का एक अर्थ यह भी होता है औरत से प्यार भरी बात चीत (वाजनान गुफ्तगू कस्दन) अपने इसी

नाजुक मिजाज की वजह से गजल है। इस नजरीये से देखा जाये तो नजर साहब के भीतर आज भी वह शायराना दिल धडकता है जो उन्हे शायर बनाता है। इस गजल संग्रह में कई खूब सूरत शेश्र है जो इस बात की ताईद करते है जैसे इसी जज्चे को शायद प्यार कहते है जहाँ बाले तुम्हे कांटा लगे मुझको चुमन महसूस होती है उसे महसूस होता होगा सीने में धडकता दिल मेरी तस्वीर को जब भी वह छूकर देखती होगी।

बहर हाल सहरा के फूल ए एफ. नजर की लेखनी से सृजित एक वे जोड संग्रह है। कथ्य की दृष्टि से जहाँ इसमे काफी विविधता है वही शिल्प की दृष्टि से देखें तो भी यह संग्रह सुदृढ़ नजर आता है। बादल, बरगद, समुन्दर घटा, हवा. चौद सूरज आदि प्रतीकों के माध्यम से नजर साहब ने बहुत ही उमदा शेर कह है। गजल के छन्द सास्त्र की दृष्टि से देखें तो भी गजल संग्रह दुरस्त नजर आता है अगर कहीं टंकन की छोटी मोटी कमी है तो वह पूर्फ रीडिंग की है गजल के चाहने वालों को ए किताब जरूर पसन्द आयेगी। मैं सूरज राय सूरज के इस शेर से अपनी बात समाप्त करना चाहता हूं कि

गर चाहते हो देखना मेरी उठान को

तो थोड़ा और उँचा करो आसमान को।

गजल मन के भावों को शेरों के माध्यम से अभिव्यक्त करने की कला का नाम है, गजल. गागर में सागर भरने के अपने सामर्थ के कारण ही वर्तमान दौर में बहुतायात से लिखी जा रही है, पहल के शायर ए.एफ. नजर सही मायनों में नये दौर के शायर हैं, वे ऐसे मसाइल को गजल को मौजू बनाते हैं जो इस दौर ने हमें दिए हैं. मुहब्बत करने की उम्र में दुनिया जहान के बारे में इतनी शिद्दत एवं संजीदगी से सोचने वाले श्नजरश निसंदेह ऐसे कलमकार हैं जो अपने आस–पास के वातावरण से शेर उठाकर अपनी गजलों को मुकम्मल करते हैं. आज का दौर विमर्शों का है. स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श आज न केवल चर्चा का अपितु लेखन का.भी बड़ा रूप ले चुका है. शायर की नजर भी इस दौर की कामकाजी औरतों पर जाती है और वे लिखते हैं–

'चूल्हा चौका फाइल बच्चे दिनभर उलझी रहती है

वो घर में और दफ्तर में अब आधी आधी रहती है'।[14]

यही नजर जब औरत पर बढ़ते हुए जुल्म और भ्रूण हत्या जैसी समस्याओं पे जाती है तो इस दर्द को वे यूं बयां करते हैं–

'उसे किरदार इस दुनिया में औरत का निभाना है

हजारों जुल्म सहने हैं मगर फिर मुस्कराना है। [15]

घटती इंसानियत और बढ़ते हुए स्वार्थ को देखकर वह कह उठते हैं कि अब भला कौन पड़ोसी की ख़बर रखता है

आज हर शख्स सितारों पर नजर रखता है ऐसे शेरों के माध्यम से नजर मौजूदा दौर के उन हालातों पर भी चिंतन करते हैं जो तथा कथित आधुनिकता ने हमें दिए हैं. नजर की शायरी में सामाजिक सरोकार भी हैं तो व्यक्तिगत विचार भी हैं. यही कारण है कि इस संग्रह में उन्होंने संयुक्त परिवार के टूटने पर, रोटी के लिए गांव छोड़ने पर, साम्प्रदायिकता पर, अव्यवस्थाओं पर, गरीबी पर, सांस्कृतिक प्रदूषण पर, बाह्य आडम्बरों पर, झूठे रीति रिवाजों पर कई खूबसूरत शेर कहे हैं 'पहल' संग्रह में नजर साहब ने मानवीय संवेदना के हर एक पहलू पर अपनी दस्तक दी है. अदबी दुनिया के सरोकारों एवं जिम्मेदारियों से पूर्णतया परिचित ए.एफ. नजर की निश्चित ही गजल के संसार में उनकी पहचान पुख्ता करेगी।.

निष्कर्षः– कहा जा सकता है कि ए.एफ नजर हिन्दी के ऐसे नवोदित गजलकार है जो गजल लेखन में पूर्ण सक्षम तथा सिद्धहस्त है। इनकी जगलों में कथ्य की दृष्टि से जहाँ काफी विविधता है वही शिल्प की दृष्टि से देखें तो भी इनकी गजलें सुदृढ़ नजर आती है। उनकी गजलें में ग्रामीण परिवेश के साथ साथ ग्रामीण संस्कृति प्रकृति के भी दर्शन होते है। 'पहल' और 'सहरा' के फूल गजल संग्रह के साथ ही कितांब गंज प्रकाशन से प्रकाशित 'लोबान' में उनकी गजले प्रकाशित हुई हैं हिन्दी गजल की आलोचना में भी ए.एफ.नजर का नाम सम्मानपूर्वक लिया जाता है। 'हिन्दी गजल के इमकान इनकी प्रसिद्ध आलोचना की पुस्तक है जिसमें समकालीन हिन्दी गजल के साथ साथ समकालीन हिन्छी गजलकारों पर भी उल्लेखनीय शोध आलेख प्रकाशित है।

संदर्भः–

1.पृष्ठ संख्या,66 सहरा के फूलः ए.एफ.नजर

2.पृष्ठ संख्या,13,वही

3.पृष्ठ संख्या,,14,वहीं

4.पृष्ठ संख्या,63,वहीं

5.पृष्ठ संख्या,34 ,वहीं

6.पृष्ठ संख्या,38,वहीं

7.पृष्ठ संख्या,67,वहीं

8.पृष्ठ संख्या,14,वहीं

9.पृष्ठ संख्या,88,वहीं

10.पृष्ठ संख्या,78,वहीं

11.पृष्ठ संख्या,30,वहीं

12.पृष्ठ संख्या,17,वहीं

13. पृष्ठ संख्या,19,वहीं

14. पृष्ठ सं. 40 पहल, बौधि प्रकाशन जयपुर

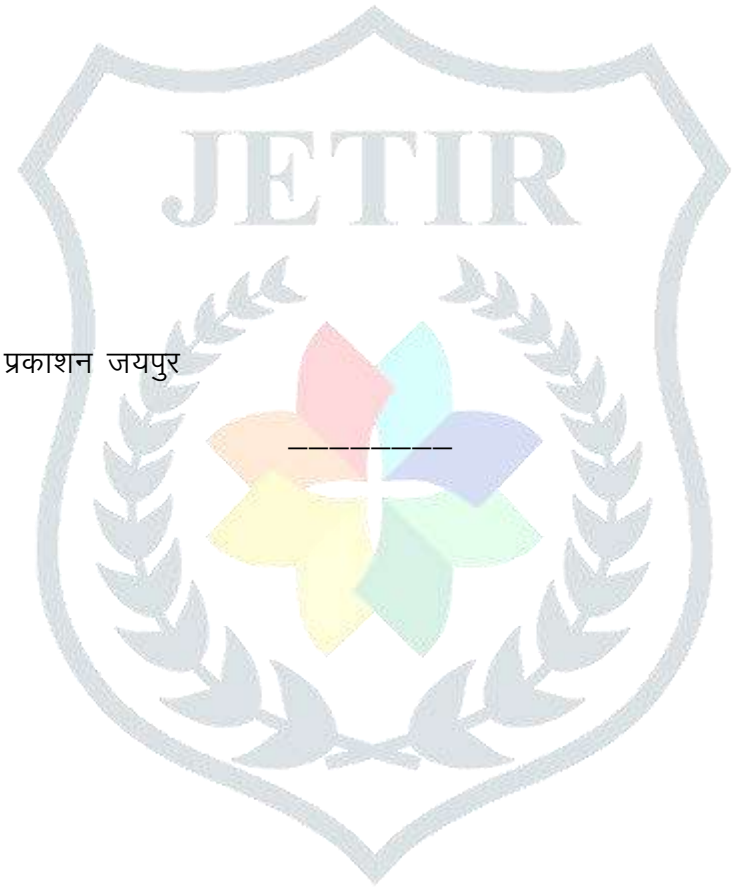

———————